[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3269

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

पर्यावरण संरक्षण सब का दायित्व

पूर्णेन्दु शर्मा
सहायक प्राध्यापक, संगीत वाद्य, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, उज्जैन

प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी अमरकृति कामायनी के प्रारम्भ में लिखा है –

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह।
एक पुरूष भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह।।

सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान युग तक मनुष्य ने विकास की लम्बी यात्रा तय की है। किन्तु इस यात्रा में वह जीवन के शाश्वत सत्य को पीछे छोड़कर अकेला आगे निकल आया है जिसके परिणाम में पर्यावरण की प्रलयंकारी समस्याओं ने जन्म ले लिया है और विश्व समुदाय विगत कई दशकों से इनसे जूझता हुआ आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है। 1972 में इसकी गम्भीरता को देखते हुए स्टॉकहोम में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पर्यावरण संरक्षण एवं मानव जाति के कल्याण हेतु दिये गये अपने वक्तव्य में कहा कि, ''मनुष्य तब तक सभ्य एवं सच्चा मानव नहीं हो सकता जब तक कि वह सम्पूर्ण मानव सभ्यता एवम् सम्पूर्ण सृष्टि को मित्रभाव से न देखे। अपने वक्तव्य में पर्यावरण संरक्षण हेतु वैदिक परम्परा एवम् भारतीय जीवन पद्धति की श्रेष्ठता को रेखांकित किया।

इसके पश्चात् 1992 से पृथ्वी सम्मेलनों का आयोजन पर्यावरणीय समस्याओं के निवारण हेतु प्रारम्भ किया गया। प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँ जैव विविधता का नष्ट होना, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियर पिघलना, समुद्री सतह का बढ़ना, तीव्र जलवायु परिवर्तन, ओजोन लेयर समस्या, जल, वायु, ध्वनि, मृदा, प्रदूषण,वनों का क्षरण, अम्लीय वर्षा, एवं अवशिष्ट पदार्थो का प्रबंधन मानव स्वास्थ्य आदि हैं। जिनके निवारण हेतु इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि विकास के लिये पर्यावरण मित्र तकनीकों को अपनाया जाये तथा (सस्टेनेबल डेव्हलपमेंट) सुनिश्चित किया जाये। इसमें विश्व के प्रसिद्ध एवम् विशिष्ट व्यक्ति जन–जागरूकता फैलाने में सहयोग दे सकते हैं।

'ग्रीन इकॉनामी' को प्रोत्साहन दिया जाये जिसके अन्तर्गत 'इको सिस्टम' और जैव विविधता को क्षति पहुँचाये बिना विकास पर बल दिया जाता है। महत्वपूर्ण तथ्य है कि विगत 40 वर्षो में अनुमानों के अनुसार पशुपक्षियों एवम् जलीय जन्तुओं आदि की जैव विविधता घटकर आधी रह गई है। वहीं मनुष्य की आबादी दोगुनी हो गई है जोकि चिन्तनीय विषय है। इसी लिये विश्वस्तर पर पर्यावरण जागरूकता हेतु 5 जून को पर्यावरण दिवस का आयोजन किया जाता है। तथा अन्य अनेक दिवस भी आयोजित किये जाते हैं। जिनके माध्यम से जन–जागरूकता फैलाने का प्रयास किया जाता है।

भारतवर्ष में विभिन्न सरकारों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा तथा गणमान्य व्यक्तियों एवं प्रसार माध्यमों द्वारा पर्यावरण जागरूकता फैलाने का प्रयास निरन्तर किया जा रहा है तथा कड़े कानूनों का विधान किया गया है जिससे पिछले कुछ दशकों में हमारे पर्यावरण में कुछ सुधार दृष्टिगत हुआ है तथा जनचेतना भी दिखाई देने लगी है, किन्तु यहाँ यह कहना उचित होगा कि विश्व के 20 प्रमुख प्रदूषित नगरों में से अनेक नगर भारतीय हैं तथा प्रमुख प्रदूषित 10 नदियों में गंगा एवं यमुना नदी का भी स्थान है।

भविष्य में मानव जाति के संरक्षण के लिये तथा सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण के लिये प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रयासरत् रहना होगा तथा विश्व के न्यूनतम प्रदुषित देशों जैसे–स्विटजरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर,

जर्मनी, स्पेन, स्वीडन, नॉर्वे आदि देशों से प्रेरणा लेकर पर्यावरण मित्र तकनीकों को अपनाकर विश्वस्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु विशेष प्रयास करने होंगे तभी प्रसाद जी की यह पंक्तियाँ सार्थक सिद्ध होंगी।

समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड, घना था।।